18 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनूभूति

एक बाप की स्मृति से समर्थ स्वरूप आत्मा की अनुभूति

➢➢ परमातम प्यार में समाई मैं सहज योगी निरंतर योगी आत्मा हूं

➳ _ ➳ मन बुद्धि की मालिक मैं आत्मा स्वयं को भृकुटी के अकाल तख्त पर देख रही हूं

→ निरंतर मन में बाबा- बाबा का अनहद नाद समाया हुआ है

→ इस साकारी देह द्वारा कार्य करती मैं आत्मा न्यारी और प्यारी बन सहजता से बुद्धि बल द्वारा एक बाप के संग हू

→ सहज योग की स्थिति में स्थित होकर किया गया हर कार्य श्रेष्ठ होता जा रहा है

■ परमातम स्मृति से सर्व समर्थ स्वरूप का स्थिति का अनुभव कर रही हूं

→ मैं सर्व समर्थ आत्मा हूं

➢➢ बाप समान अव्यक्त वतन वासी बन्ना

➳ _ ➳ स्वयं के साकारी देह को आकारी लाइट के रूप में परिवर्तित होते देख रही हूं

→ धीरे धीरे संपूर्ण देह प्रकाशमई में हो गई है

→ लाइट के इस शरीर में मैं आत्मा भृकुटी के तख्त पर चमक रही हूं

→ चारों और प्रकाश ही प्रकाश अनुभव हो रहा है

■ मैं संपूर्ण हल्के पन का अनुभव कर रही हूं

■ सर्व प्रकार के बोझ से मुक्त मैं आकारी फरिश्ता संपूर्ण हल्का हू

➳ _ ➳ इस साकारी दुनिया से दूर स्वयं को अव्यक्त वतन में बाप दादा के सम्मुख देख रही हूं

→ बाप दादा से असीम स्नेह का अनुभव कर रही हूं

→ बापदादा का वरदानी हाथ मुझ आत्मा के सिर पर है

→ स्नेह की इस छत्रछाया में सर्व संकल्प समाप्त हो चुके हैं

→ एक बाप दूसरा ना कोई इसी एक संकल्प में स्थित होती जा रही हूं

■ मैं और मेरा बाबा दूसरा ना कोई

→ संपूर्ण अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ परमातम प्यार में लवलीन मैं स्नेह स्वरूप सो समान स्वरूप आत्मा हूं

→ मन का हर भाव उसको अर्पण करती उस एक की याद के सागर में समाती जा रही हूं

→ बाप दादा की यादों के झूले में झूलते उसके सनेह में संपन्न बाप समान अकारी स्थिति में स्थित हूं

- उसके स्नेह में समाई स्वयं को उसी के जैसा अनुभव कर रही हूं
- स्नेह समानता में परिवर्तन हो गया है
- बीज से स्नेह ने मुझ आत्मा को सर्व आत्माओं का स्नेही बना दिया है
- स्वयं को परमातम स्नेह से भरपूर अनुभव करती मैं आत्मा हर आत्मा के प्रति स्नेह और रहम की भावना रखती हूं